तुम चाहो तो...

पूजा गुप्ता*

तुम चाहो तो,
जिंदगी को हजार सवालों की उलझन बना लो,
या जीने की कला ढूँढ़ने का सुहाना सफर बना लो।

जब तक जिंदगी है,
सुख-दुःख तो लगे ही रहने है,
चाहे तो दुखों का सामान इकट्ठा कर सँजो लो,
या उन्हें छोड़, खुशियों का खजाना लूट लो।

बीता वक्त लौट कर नहीं आना है,
और इस पल को भी जल्द चले जाना है,
चाहे तो बैठकर गुजरे कल का मातम मना लो,
या आज, अभी के समय को यादगार बना लो।

जीवन की डगर बहुत लंबी है,
सफर में रुकावटें तो आएंगी ही,
चाहे तो डर कर रुक जाओ,
या हिम्मत कर उन्हें पार कर जाओ।

जीवन की किताब प्रतीत रूप में कठिन,
परन्तु वास्तव में बहुत सरल है,
चाहे तो इसे पढ़कर समझ जाओ,
या समझ कर भी अनजान बन जाओ।

हर किसी को सफलता के शिखर तक पहुँचना है,
विजय को पाना है,
चाहे तो मेहनत कर उसे हासिल कर लो,
या कठिन मानकर विचार छोड़ दो।

क्यों ना कुछ बढ़िया करो,
जग में अपना नाम कमाओ,
चाहो तो धरती-आसमान एक कर जाओ,
रोज नए कीर्तिमान बनाओ।
तुम चाहो तो....

❐❐❐

* सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग
श्याम लाल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय